2

स्केल-पैमाना कितना बेगाना

मो. उमर*

अक्सर देखने में आता है कि बच्चों को पढ़ाई के विषय में जो बातें समझ नहीं आतीं, वह उसका रट्टा लगा लेते हैं। ऐसे में शिक्षक का उत्तरदायित्व बनता है कि वे बच्चों को मुश्किल लगने वाली बातों को आसानी से किसी अन्य माध्यम से समझाएँ। बच्चों को सिखाने के कई तरीके हैं, शिक्षक को सदैव ऐसे माध्यम का चयन करना चाहिए जो बच्चों को रोचक लगे और जिससे वे सरलता से अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर सकें। शिक्षक इस बात का भी ध्यान रखे कि वह जो भी सूचना दे वह ऊपरी तौर पर न होकर गहराई में हो, जिससे बच्चे उस बात की आवश्यकता/अहमियत को समझते हुए उसका ध्यान रखें। इसे कैसे किया जाए, जानने के लिए पढ़िए यह लेख— स्केल-पैमाना कितना बेगाना।

मैं कक्षा छठी में गणित पढ़ाने जाता हूँ। यूँ तो पाँचवी तक की गणित की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए माप के अनुसार रेखा बनाने के अभ्यास कई बार दिए जा चुके होते हैं, फिर भी मेरी कक्षा के बहुत-से बच्चे अभी भी सही ढंग से रेखा नहीं खींच पाते हैं। वे स्केल का इस्तेमाल महज़ हाशिया बनाने या और कोई सीधी रेखा खींचने में ही करते हैं। छोटा स्केल कई बच्चों के पास था ही नहीं और बड़ा स्केल उन्होंने अपने हाथों पर तब ही महसूस किया है, जब ज़ोर से उनकी हथेली पर आकर पड़ा है।

मैं एक बार अच्छी तरह से स्केल का प्रयोग कर बच्चों को स्केल का महत्त्व और प्रयोग समझना चाहता था, लेकिन उससे पहले मैं यह जान लेना चाहता था कि वे स्केल का प्रयोग करते समय किस-किस प्रकार की गलतियाँ करते हैं। दिए गए नाप के अनुसार स्केल से रेखा खींचना बड़ा नीरस काम है। इससे ज़्यादा मज़ा तो स्केल को सिर में घिस कर कागज के टुकड़ों को चुंबक की तरह खींचने में ही आता है। तो भला किस तरह आगे बढ़ा जाए कि विषय रुचिकर भी बन जाए और सीखना-सिखाना भी

* *एकलव्य*, होशंगाबाद, म. प्र.

हो जाए। इन सब बातों को ध्यान में रखकर मैंने एक योजना बनाई। इस योजना में मुझे शिक्षण सहायक सामग्री की ज़रूरत पड़ने वाली है। शिक्षण सहायक सामग्री हमेशा वैसी ही नहीं होती जैसा कि इस नाम ''शिक्षण सहायक सामग्री'' से आभास होता है। मेरी सामग्री में मेरा गमछा (जो अक्सर मेरे थैले में ही होता है), लकड़ी की पटरी (हार्डवेयर की दुकान से खरीदी थी) और एक स्केच पेन था। आगे लेख को पढ़ते हुए आप जान पाएँगे कि मैंने इन चीजों का इस्तेमाल कैसे किया?

अगले दिन सुबह कक्षा में पहुँचकर मैंने बोर्ड पर कुछ सवाल लिखें।

प्रश्न. रेखा खींचो –

1. 7 से.मी. लंबी
2. 5.4 से.मी. लंबी
3. 3 इंच लंबी

तकरीबन एक तिहाई कक्षा के बच्चों के पास स्केल था। कुछ बच्चों के पास लकड़ी की सादी पटरियाँ थी।

कुछ बच्चे अपने ज्यामिति बॉक्स में स्केल की गैर-मौजूदगी में सेट स्कवायर से ही काम चला रहे थे। इस तरह की परिस्थिति को देखकर मैंने बच्चों को उनके साथी से स्केल माँगने की आज्ञा दे दी। कुछ बच्चों ने काफी जल्दी रेखा खींच ली थी, जबकि बाकी बच्चे इधर-उधर से ताँक-झाँक या किसी की मदद की उम्मीद में बैठे थे। मैं कक्षा में प्रत्येक बच्चे की कॉपी में झाँकता घूम रहा था। फायज़ा ने भी अपनी कॉपी में तीनों नाप की रेखा खींच ली थी।

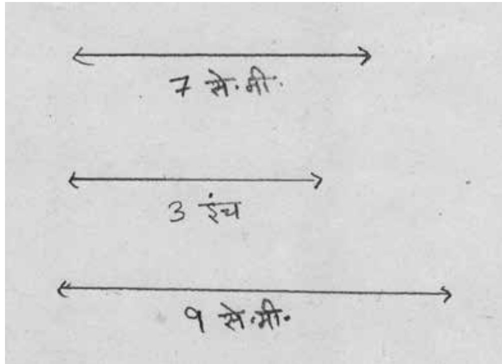

उसकी कॉपी पर नजरें दौड़ाते ही, मुझे वहीं रुक जाना पड़ा।

मैंने फायज़ा से पूछा, ''7 से.मी. लंबी रेखा और 5.4 से.मी. लंबी रेखा में कौन-सी बड़ी होगी ?''

फायज़ा ने जवाब दिया, ''7 से.मी. वाली।''

आगे मैंने पूछा, ''तुमने जो रेखा खींची है, उसमें कौन सी बड़ी है?''

फायज़ा ने इसका जवाब दिया, ''5.4 से. मी. वाली।''

मेरा फायज़ा से अगला सवाल था कि, 'तो कौन-सी रेखा लंबी बनेगी।'

इस पर फायज़ा ने कहा, ''5.4 से.मी. वाली।''

फायज़ा का जवाब सुनने के बाद मैंने उससे अगला प्रश्न पूछा, 'अच्छा बताओ 7 से.मी. ज़्यादा है कि 5.4 से.मी.?'

इस बार फायज़ा ने जवाब दिया, ''7 से. मी. ज़्यादा है।''

आगे मेरा प्रश्न था कि, 'तो कौन-सी बड़ी बननी चाहिए?'

फायज़ा ने एक बार फिर कहा, ''7 से. मी. वाली।''

फायज़ा के उत्तर के बाद मैंने पूछा, ''तो कहाँ गड़बड़ हो रही है?''

कुछ देर सोचने और स्केल को उलट-पलट कर रेखा पर रखने के बाद वह बोली, ''इसमें तो 6 तक ही है।''

असल में फायज़ा ने इंच वाली तरफ को रेखा से सटाकर रखा था। इस स्केल में इंच की नाप 6 तक आकर खत्म हो रही थी, इसीलिए 7 तक मापा जाना उसे मुश्किल लग रहा था।

इसके बाद मैंने फायज़ा से कहा, ''एक बार स्केल से मापकर दिखाओ कि जो रेखा बनाई है, वह उतनी ही लंबी है जितनी कि सवाल में कहा गया है?''

फायज़ा ने 7 से.मी. के लिए बनाई गई रेखा से सटाकर स्केल को इस तरह रखा —

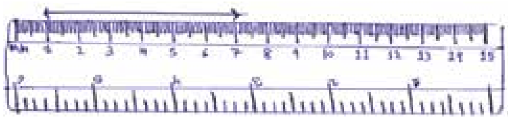

फायज़ा ने जवाब दिया, ''7 से.मी. है सर जी।''

इस तरह से नाप लेने वाली फायज़ा अकेली नहीं थी। 7 से.मी. की रेखा खींचने के लिए स्केल पर लिखे 1 से लेकर 7 तक पहुँच रहे थे। ये तो देखने में ही समझ में आ रहा था कि फायज़ा पहला से.मी. छोड़ रही है, लेकिन 5.4 से.मी. लंबी रेखा 7 से.मी. लंबी रेखा से बड़ी कैसे बन गई, यह गुत्थी मेरे लिए अभी भी रहस्य बनी हुई थी।

इस समस्या का हल ढूँढने के लिए मैंने फायज़ा से पूछा, ''ये रेखा कैसे बनाई है?''

फायज़ा ने कॉपी में लिखे 5.4 के अंकों की ओर इशारा करते हुए बताया, ''5 और 4 से 9 बन गया।''

स्केल रखकर उसने दिखाया भी कि एक रेखा 1 से चलकर 9 पर खत्म हो रही थी।

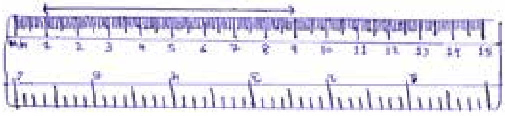

कुछ बच्चों ने 5.4 से.मी. लंबी रेखा बनाने के लिए 1 से शुरू करके 5 पर ही रेखा को खत्म कर दिया था। शायद दशमलव और उसके बाद में लिखे अंकों के झंझट से दूर रहना ही इन्हें ठीक लगा होगा।

सभी बच्चे जानना चाहते थे कि उन्होंने सही किया है या गलत। मैंने उन्हें सीधा जवाब देना उचित नहीं समझा, बल्कि अपनी योजना को अमल करने के लिए सोचने लगा।

मैंने बच्चों से पूछा '' तुम लोग जिससे रेखा खींच रहे हो, जानते हो इसे क्या कहते हैं?''

बच्चों ने जवाब दिया, ''हाँ सर जी, स्केल।''

इसके बाद मैंने पूछा कि 'बच्चों तुमने कितनी तरह के स्केल देखे हैं?'

कक्षा से आई अलग-अलग आवाजों ने मेरी भी जानकारी बढ़ा दी? बच्चों ने न सिर्फ स्केल के प्रकार बल्कि उनकी कीमतें भी बता डालीं।

बच्चों ने कहा, ''प्लास्टिक वाला दो रुपये का, लकड़ी वाला पाँच रुपये का और लोहे वाला पंद्रह रुपये का मिलता है।''

आगे मैंने पूछा, 'अच्छा स्केल कैसे बना होगा? इसकी ज़रूरत क्यों पड़ी होगी?'

एक बच्चे ने जवाब दिया, ''फैक्ट्री वाले बनाते हैं सर जी, स्कूल के बच्चे खरीदते हैं।''

उसके बाद मैंने बच्चों से कहा, 'अच्छा चलो एक नाटक खेलते हैं। मुझे एक बड़े लड़के और एक छोटे लड़के की ज़रूरत है।'

बच्चों द्वारा दो-चार नाम गूँजने के बाद उन्होंने स्वयं सहमति बना ली और सलमान तथा आकाश का नाम आया। मुझे एक दुकानदार की ज़रूरत भी थी और इस नाटक में लड़कियों की भागीदारी करने के लिए मैंने सोनम को बुला लिया। वह शर्माते हुए आकर एक किनारे खड़ी हो गई। सलमान को कुर्सी पर बिठाते हुए मैंने कहानी शुरू की।

मैंने कहा, ''आज से कई सौ साल पहले सलमान चाचा अपने घर में खिड़की के पास बैठे थे। वहाँ से धूप आ रही थी। उन्हें लगा क्यों न एक परदा टाँग दिया जाए। उनका पड़ोसी रामू रोज गुड़ बेचने बैलगाड़ी से बाज़ार जाता था। सलमान चाचा ने अपने बित्ते से खिड़की की लंबाई और चौड़ाई नापी और रामू को बता दिया कि इसी नाप का कपड़ा ले आना। चाचा ने उसे पैसे भी दे दिए।''

नाटक के रूप में सलमान ने सच में खिड़की की लंबाई और चौड़ाई को नापा। चौड़ाई 4 बीता 6 अँगुली और लंबाई 6 बीता थी।

रामू का किरदार निभा रहा आकाश भी बैलगाड़ी हाँकता हुआ बाजार के पास गया और दुकानदार को नाप बताकर कपड़ा माँगा। दुकानदार ने रामू से कहा, ''तुम अपने हाथ से ही नाप लो।'' इस तरह रामू ने 6 बीता लंबा और 4 बीता 6 अँगुली चौड़ा कपड़ा नाप लिया। दुकानदार ने यह कपड़ा काटकर दे दिया। घर लौट कर रामू ने यह कपड़ा सलमान चाचा को दे दिया । चाचा ने यह कपड़ा खिड़की से सटाकर नापा तो कपड़ा काफी छोटा निकला। वो रामू पर बहुत नाराज हुए। रामू ने कहा, ''चाचा मैं तो उसी नाप का कपड़ा लाया हूँ जो आपने बताया था।'' अब बारी थी रुककर सवाल-जवाब करने की। मैंने पूछा, ''कपड़ा कम कैसे हो गया ?''

बच्चों ने उत्तर दिया, ''रामू का बीता छोटा था।'' मैंने बात को आगे बढ़ाते हुए पूछा, ''तो सलमान चाचा को सही नाप का कपड़ा मँगाने के लिए क्या करना चाहिए था?'' इसका जवाब दीपक ने दिया, ''वह खुद जाता।'' दीपक का जवाब सही था, लेकिन अभी उसे मान लेने से मैं अपने उद्देश्य तक नहीं जा सकता था। तो मैंने नयी शर्त जोड़ दी।

मैंने कहा, ''मान लो कि सलमान चाचा बूढ़े हैं, बीमार भी रहते हैं इसलिए शहर नहीं जा सकते तब?''

दीपक ने कहा, ''किसी बड़े को भेजता''

फिर मैंने कहा, ''अच्छा मान लो मैं सलमान चाचा का बड़ा बेटा हूँ। वो मुझे भेजते तो क्या होता?''

कक्षा के दो अन्य बच्चे अंकित और महेंद्र ने कहा, ''कपड़ा बड़ा हो जाएगा।''

बच्चों की बातें सुनने के बाद मैंने कहा, ''हुम्म .... छोटे को भेजो तो छोटा हो जाएगा

और बड़े को भेजो तो बड़ा हो जाएगा। तो ऐसे में और क्या किया जा सकता है ?''

कुछ देर कक्षा में खमोशी रही तभी क्षमा धीरे से बोली, ''रस्सी से नापकर देता।''

कक्षा के अन्य बच्चों ने भी क्षमा की इस सलाह पर सहमति जताई। सलमान चाचा के हाथ में देने के लिए रस्सी ढूँढी जाने लगी।

एक लड़के ने आगे बैठी लड़कियों की चोटी में लगे लाल रिबन की ओर इशारा करते हुए कहा, ''सर जी इनके रिबन खुलवा लो।'' इसके बाद एक लड़का अपने हाथ में लिपटा कलावा का लाल धागा खोल लाया था। यह धागा उसने सलमान को थमा दिया ।

सलमान चाचा एक बार फिर अपनी कुर्सी से उठे और धागे की मदद से खिड़की की चौड़ाई नापकर धागे में उसी जगह एक गाँठ लगा दी फिर लंबाई नापी और उसके लिए भी एक गाँठ लगा दी। एक बार फिर सलमान चाचा ने रामू को यह धागा देकर बाजार भेजा।

बाजार में बैठे दुकानदार के पास मेरे गमछे को कपड़ा बनाकर रख दिया गया था। दुकानदार ने रामू के बताए अनुसार धागे से कपड़ा नाप लिया। जो हिस्सा बढ़ रहा था उसे मोड़ देने पर वह अपेक्षित नाप के अनुकूल बन गया।

रामू ने दुकानदार को पैसे दिए और घर लौटकर उसने परदे का कपड़ा सलमान चाचा को दे दिया। चाचा ने तुरंत खिड़की पर डालकर इसे नाप लिया। वे खुश हुए क्योंकि इस बार कोई गड़बड़ नहीं हुई थी।''

यहाँ तक का नाटक बच्चों को पसंद आ रहा था। मेरी योजना का पहला चरण पूरा हो गया था। बच्चे एक स्थाई नाप होने की ज़रूरत महसूस कर पाए और रस्सी को इस्तेमाल करने का सुझाव दे पाए थे। यानी वे समझ सकते थे कि चाचा की खिड़की और दुकानदार के कपड़े को किसी एक ही चीज से नापा जाना जरूरी है। अब मैं अपनी योजना पर आगे बढ़ सकता था।

मैंने अपनी कहानी को जारी रखा —

''एक दिन सलमान चाचा के घर कुछ मेहमान आने वाले थे। चाचा अपना घर सजा रहे थे। उन्होंने आज फिर रामू को बुलाया और एक रस्सी तथा पैसे देते हुए बोले, ''अरे, रामू आज बजार से लौटते वक्त इस नाप का कपड़ा ला देना, दरवाजे में भी परदा लगाना है । ''

रामू बाजार में कपड़े की दुकान पर पहुँचा और उसने जैसे ही अपनी जेब में हाथ डाला तो उसे पता चला कि रस्सी का टुकड़ा तो उसकी जेब में है ही नहीं। वह दुकान वाले से कपड़ा कैसे ले?

शाम को रामू बिना कपड़ा खरीदे लौट आया। चाचा के घर मेहमान आ चुके थे। रामू उन्हीं के सामने रस्सी खो जाने की बात बताने लगा। मेहमान काफी समझदार थे उन्होंने एक लकड़ी की पटरी ली और उस पर बराबर दूरी पर कई निशान बनाकर सलमान चाचा को देते हुए बोले इससे नापो।

चाचा ने इस पटरी की मदद से नापा तो दरवाजा 80 खाना चौड़ा और 120 खाना लंबा निकला। दूसरे दिन रामू इसी पटरी को लेकर

बाजार गया और कपड़े वाले की दुकान पर इस पटरी की मदद से 80 खाना लंबा और 120 खाना चौड़ा परदे का कपड़ा ले आया। दुकानदार को भी ये पटरी पसंद आई उसने भी अपने लिए ठीक ऐसी ही पटरी बनवा ली, धीरे-धीरे ये पटरी सभी कपड़े वालों, बढ़ई, राज मिस्त्री, कपड़े सिलने वालों आदि के पास मिलने लगी। सभी लोगों को ये इतना पसंद आई कि कारखाने में छोटी और बड़ी आकार की बनाई जाने लगी। लास्टिक, लोहे और लकड़ी तथा रबर की भी बनने लगी। हमारे समय तक आते-आते ये और भी अच्छी बन गई है। अब हम इसे अपने बस्ते में रख कर स्कूल भी ला सकते हैं, इसी को आज हम लोग स्केल कहते हैं।

कपड़ा बेचने वाले अब लोहे की बड़ी पटरी रखते हैं, जिसमें 100 खाने होते हैं। इसे 100 सेंटीमीटर भी कहा जाता है। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे छोटी पटरियों का इस्तेमाल करते हैं और मिस्त्री लोग इसी तरह की रबर की टेप का इस्तेमाल करते हैं, जो काफी लंबी होती है।

तो ये थी स्केल बनने की कहानी जो बच्चों को काफी पसंद आई। आज की कक्षा खत्म हो गई। अगले दिन यहाँ से आगे बढ़ना है।

दूसरे दिन कक्षा में पहुँचकर मैंने बच्चों से पूछा कि किस-किस को अपनी लंबाई मालूम है? सब बच्चे चुप रहे किसी को अपनी लंबाई नहीं मालूम थी।

अब मैंने अपने सवाल को बदलकर दूसरी तरह से पूछा, ''अच्छा बताओ तुम्हारी कक्षा में कौन सबसे छोटा है?''

एक साथ दो नामों का शोर हुआ — अंकित, लक्ष्मी।

अंकित और लक्ष्मी कौन हैं मुझे पूछना नहीं पड़ा। सभी बच्चों की नजरें उन्हीं की ओर थीं। सारी कक्षा इन दोनों को ही सबसे छोटा मानती थी ।

मैंने कहा, ''लेकिन कैसे पता करेंगे कि सबसे छोटा कौन है?''

श्याम ने कहा, ''रस्सी से सर जी।''

फिर मैंने श्याम को सामने बुला लिया और उससे अंकित की लंबाई नापने को कहा।

श्याम ने अंकित को दीवार के सहारे खड़ा कर दिया फिर पेन से उसके सिर के उपर दीवार पर निशान लगाया। इसके बाद एक रस्सी से निशान से लेकर जमीन तक की रस्सी पर गाँठ बाँध ली। इसके बाद श्याम ने स्केल से रस्सी को नापना शुरू किया। स्केल केवल 15 से.मी. लंबा था। अत: कक्षा के बाकी बच्चे भी हर बार स्केल उठाकर रखते जाने के साथ ही 15 जोड़ते जा रहे थे। इस तरह जब-जब श्याम स्केल रखता तो पंद्रह, तीस, पैंतालीस, साठ, पचहत्तर, नब्बे आदि की आवाजें आती थी। रस्सी की गाँठ तक नापने में स्केल को 8 बार पूरा-पूरा रखना पड़ा। बच्चे मन ही मन जोड़ करते आ रहे थे, आखिरी बार स्केल रखते ही वे बोले 120 से.मी. है सर जी ।

मैंने उन्हें बताया कि '100 से.मी. एक मीटर के बराबर होता है। तो हम अंकित की लंबाई को 1 मीटर और 20 से.मी. भी कर सकते हैं।'

इसके बाद त्रिवेणी ने भी इसी तरह से लक्ष्मी की लंबाई नापी। लक्ष्मी की लंबाई नापने के लिए त्रिवेणी ने रस्सी पर जहाँ गाँठ लगाई थी, वह स्केल से पूरी-पूरी नहीं नापी जा सकी। 7 बार स्केल पूरा-पूरा रखा गया और कुछ रस्सी बची रह गई इस रस्सी को स्केल से नापने में पता चला कि 12 से.मी. है।

सतीश ने अपनी जगह पर बैठे-बैठे कहा, "एक सौ सत्रह से.मी. है सर जी।"

आगे मैंने पूछा, "अंकित और लक्ष्मी में कौन ज़्यादा लंबा है?"

सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा, "अंकित।"

अब मैंने बोर्ड पर सवाल के रूप में इस प्रकार लिखा, " अंकित और लक्ष्मी की लंबाई में कितना अंतर है?"

बच्चों ने बताया कि "अंतर" पता करने का मतलब क्या है।

अब बच्चे बता पा रहे थे "दोनों की लंबाई में 3 से.मी. का अंतर है। "

जिस बच्चे की लंबाई नापी जा रही होती तो वह बिल्कुल खामोश सावधान की मुद्रा में खड़ा रहता/रहती कि कहीं उसके हिलने से लंबाई में अंतर आ जाएगा।

दूसरी तरफ जो बच्चा दूसरे बच्चे की लंबाई नाप रहा होता था, वो भी पूरी मुस्तैदी के साथ यह काम करता था। अब ज़रूरत थी इस नाप को कॉपी तक पहुँचाने की, यानी नाप देकर उसके अनुसार कुछ रेखाएँ बनवाने की। इसके लिए मुझे कुछ सवाल बनाने थे। आमतौर पर किताबों में कुछ इस तरह के सवाल दिए होते हैं—

1. 5 से.मी. की रेखा खींचो।
2. बिन्दु च से बिंदु छ की दूरी 78.5 से.मी. है। रेखा बनाकर दर्शाओ।

अब आप खुद ही सोचिए रेखाचित्र में "रेखा" बिन्दु 'पी', 'क्यू' और दर्शाओ जैसे शब्द बच्चे को किस हद तक आकर्षित कर पाएँगे। भला क्यों बच्चे अपनी रुचि से यह काम करेंगे? और ऐसा करने के पीछे प्रयोजन क्या हैं? यह भी उन्हें नहीं मालूम ।

मैंने बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ नए सवाल बनाए, जिन्हें करने में बच्चों को मज़ा भी आए और साथ ही यह भी मालूम रहे कि वे क्या बना रहे हैं और क्यों बना रहे हैं? तो मेरे सवाल इस प्रकार थे —

1. एक खेत बनाओ जिसकी लंबाई 10 से.मी. और चौड़ाई 6 से.मी. है।
2. पतंग उड़ रही है, उसका धागा 8-5 से.मी. लंबा बनाओ ।
3. एक घर बनाओ इसकी लंबाई 2 इंच और चौड़ाई 1इंच है।
4. सुई में 8.7 से.मी. लंबा धागा डालो।

तकरीबन सभी बच्चों ने इन सवालों को करने का प्रयास किया। कुछेक बच्चों ने अब भी इंच और सेंटीमीटर के बीच भ्रमित होकर इंच नाप की रेखा को सेंटीमीटर में ही बना दिया है। इसे नज़रअंदाज़ किया जाए तो अधिकांश ने कुछ खास गलती नहीं की है। शुरूआती एक सेंटीमीटर को छोड़कर रेखा खींचने की गलती भी इस बार न के बराबर हुई है।

अगले एक-दो दिन मैं उनके लिए अलग-अलग गतिविधियाँ लेकर गया। नवनिर्मिति संस्था ने अलग-अलग आकृति और आकार के रबर के टुकड़े बनाए हैं, जो गीला करने पर आसानी से कुछ देर तक बोर्ड पर चिपकाए जा सकते हैं। मैंने ये टुकड़े ले जाकर बच्चों के हाथों में देकर कहा कि सभी अपने-अपने टुकड़ों के किनारों की लंबाईयाँ नापेंगे। जिनके टुकड़े बहुभुज थे उन्होंने तो स्केल से रख कर नापना शुरू कर दिया, लेकिन कुछ बच्चों को वृत्ताकार चकतियाँ मिली थीं। वे सोच में पड़े थे कि इसके किनारे की लंबाई कैसे नापी जाए। कुछ बच्चों ने कहा, ''सर जी इसमें तो किनारे हैं ही नहीं।'' लेकिन एक लड़की ने धागा माँगा और उसे चकती की परिधि पर लपेट करके निशान डाल लिया। इसके बाद उसने धागे को वापिस खोलकर स्केल से सटाकर रखा और हम सब को नाप बता दिया। इसी तरीके को अपनाकर बाकी बच्चों ने भी अपनी-अपनी चकतियों की परिधि नाप ली।

इसी प्रकार एक दिन मैंने कोरे कागज़ के बहुत सारे टुकड़े काट डाले। ये सब टुकड़े अलग-अलग आकार और आकृति के थे । इन टुकड़ों को बच्चों में बाँट कर मैंने कहा, ''सब अपने टुकड़ों पर अपना नाम लिख लें और उसमें जितनी भी भुजाएँ या किनारे हों उन्हें नाप कर वहीं पर लिखते जाएँ। इसके बाद आकर अपने इस टुकड़े में गोंद लगाकर बोर्ड पर लगे बड़े चार्ट में चिपकाते जाएँ। बच्चों ने ऐसा ही किया। दो चार्टों में कक्षा के सभी बच्चों के कागज के आकार चिपक गए थे। दफ्तर आकर जब मैंने इन्हें नापा तो अधिकांश के नाप सही निकले हैं। अब मैं उनके साथ तीन आयामी वस्तुओं की लंबाई,चौड़ाई और ऊँचाई नापने पर काम कर रहा हूँ।

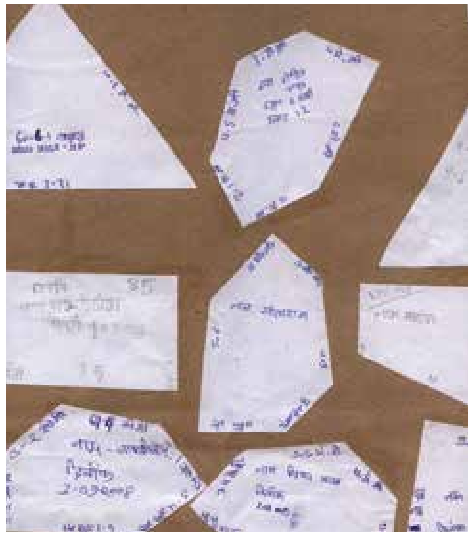

गणेश ने तो एक दिन खुशी-खुशी आकर मेरे दफ्तर में बताया कि स्कूल के बगल में स्थित दुकान पर एक रुपये की मिलने वाली इनाम की पर्ची में उसका स्केल खुला है, जिसमें दिल और गोला बनाने के लिए खाँचा भी कटा हुआ है। अब वह रोज़ स्केल लेकर आएगा। गणेश ने मुझे यह भी बताया कि उसने अपने दोस्तों की लंबाई भी एक रस्सी के टुकड़े और इसी स्केल की मदद से नाप ली है। तो अब मेरी कक्षा में स्केल उपेक्षित और केवल हाशिया बनाने का साधन भर न रहकर एक रोचक खिलौना बन चुका है।